

## **Resource: Open Hindi Contemporary Version**

### **License Information**

**Open Hindi Contemporary Version** (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, [Biblica, Inc.](#), 2019, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

## Open Hindi Contemporary Version

### **2 Timothy 1:1**

<sup>1</sup> पौलॉस की ओर से, जो मसीह येशु में उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा के द्वारा मसीह येशु का प्रेरित है,

<sup>2</sup> प्रिय पुत्र तिमोथियॉस को: हमारे पिता परमेश्वर और मसीह येशु, हमारे प्रभु की ओर से अनुग्रह, कृपा और शांति मिले।

<sup>3</sup> मैं रात-दिन अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ, जिनकी सेवा मैं शुद्ध विवेक से उसी प्रकार करता हूँ, जैसै मेरे पूर्वज करते थे।

<sup>4</sup> तुम्हारे आंसुओं को याद करते हुए, मुझे तुमसे मिलने की लालसा होती है कि मेरा आनंद पूरा हो जाए।

<sup>5</sup> मुझे तुम्हारा निष्कपट विश्वास याद आता है, जो सबसे पहले तुम्हारी नानी लोइस तथा तुम्हारी माता यूनिके में मौजूद था, और जो निश्चित ही तुममें भी मौजूद है।

<sup>6</sup> यही कारण है कि मैं तुम्हें याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर द्वारा दी गई उस क्षमता को पुनर-ज्वलित करो, जो तुम पर मेरे हाथ रखने के द्वारा तुममें थी।

<sup>7</sup> यह इसलिये कि परमेश्वर ने हमें भय का नहीं परंतु सामर्थ, प्रेम तथा आत्म-अनुशासन का मन दिया है।

<sup>8</sup> इसलिये न तो हमारे प्रभु के विषय में गवाही देने में और न मुझसे, जो उनके लिए बंदी हूँ, लज्जित होना परंतु परमेश्वर द्वारा दी गई सामर्थ के अनुसार ईश्वरीय सुसमाचार के लिए कष्ट उठाने में मेरे साथ शामिल हो जाओ।

<sup>9</sup> परमेश्वर ने ही हमें उद्धार प्रदान किया तथा पवित्र जीवन के लिए हमें बुलाया है—हमारे कामों के आधार पर नहीं परंतु सनातन काल से मसीह येशु में हमारे लिए आरक्षित अपने ही उद्देश्य तथा अनुग्रह के अंतर्गत।

<sup>10</sup> इस अनुग्रह की अभिव्यक्ति अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह येशु के प्रकट होने के द्वारा हुई है, जिन्होंने एक ओर तो मृत्यु को नष्ट किया तथा दूसरी ओर ईश्वरीय सुसमाचार के द्वारा जीवन तथा अमरता को प्रकाशित किया।

<sup>11</sup> इसी ईश्वरीय सुसमाचार के लिए मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक चुना गया।

<sup>12</sup> यही कारण है कि मैं ये यातनाएं भी सह रहा हूँ किंतु यह मेरे लिए लज्जास्पद नहीं है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने किन में विश्वास किया है तथा मुझे यह पूरा निश्चय है कि वह उस दिन तक मेरी धरोहर की रक्षा करने में पूरी तरह सामर्थी हैं।

<sup>13</sup> जो सच्ची शिक्षा तुमने मुझसे प्राप्त की है, उसे उस विश्वास और प्रेम में, जो मसीह येशु में बसा है, अपना आदर्श बनाए रखो।

<sup>14</sup> पवित्र आत्मा के द्वारा, जिनका हमारे भीतर वास है, उस अनुपम धरोहर की रक्षा करो।

<sup>15</sup> तुम्हें यह मालूम ही है कि आसिया प्रदेश के सभी विश्वासी मुझसे दूर हो गए हैं, उनमें फ़िगेलस तथा हरमोगेनेस भी हैं।

<sup>16</sup> ओनेसिफ़ोरस के परिवार पर प्रभु कृपा करें। उसने अक्सर मुझमें नई स्फूर्ति का संचार किया है। मेरी बेड़ियां उसके लिए लज्जा का विषय नहीं थी।

<sup>17</sup> जब वह रोम नगर में था, उसने यत्पूर्वक मुझे खोजा और मुझसे भेट की।

<sup>18</sup> इफ्रेसॉस नगर में की गई उसकी सेवाओं से तुम भली-भाँति परिचित हो। प्रभु करें कि उस दिन उसे प्रभु की कृपा प्राप्त हो!

## 2 Timothy 2:1

<sup>1</sup> इसलिये, हे पुत्र, मसीह येशु में प्राप्त हुए अनुग्रह में बलवान हो जाओ।

<sup>2</sup> उन शिक्षाओं को, जो तुमने अनेकों गवाहों की उपस्थिति में मुझसे प्राप्त की हैं, ऐसे विश्वासयोग्य व्यक्तियों को सौंप दो, जिनमें बाकियों को भी शिक्षा देने की क्षमता है।

<sup>3</sup> मसीह येशु के अच्छे योद्धा की तरह मेरे साथ दुःखों का सामना करो।

<sup>4</sup> कोई भी योद्धा रणभूमि में दैनिक जीवन के झंझटों में नहीं पड़ता कि वह योद्धा के रूप में अपने भर्ती करनेवाले को संतुष्ट कर सके।

<sup>5</sup> इसी प्रकार यदि कोई अखाड़े की प्रतियोगिता में भाग लेता है किंतु नियम के अनुसार प्रदर्शन नहीं करता, विजय पदक प्राप्त नहीं करता।

<sup>6</sup> यह सही ही है कि परिश्रमी किसान उपज से अपना हिस्सा सबसे पहले प्राप्त करे।

<sup>7</sup> मेरी शिक्षाओं पर विचार करो। प्रभु तुम्हें सब विषयों में समझ प्रदान करेंगे।

<sup>8</sup> उस ईश्वरीय सुसमाचार के अनुसार, जिसका मैं प्रचारक हूं, मेरे हुओं में से जीवित, दावीद के वंशज मसीह येशु को याद रखो।

<sup>9</sup> उसी ईश्वरीय सुसमाचार के लिए मैं कष्ट सह रहा हूं, यहां तक कि मैं अपराधी जैसा बेड़ियों में जकड़ा गया हूं—परंतु परमेश्वर का वचन कैद नहीं किया जा सका।

<sup>10</sup> यहीं कारण है कि मैं उनके लिए, जो चुने हुए हैं, सभी कष्ट सह रहा हूं कि उन्हें भी वह उद्धार प्राप्त हो, जो मसीह येशु में मिलता है तथा उसके साथ अनंत महिमा भी।

<sup>11</sup> यह बात सत्य है: यदि उनके साथ हमारी मृत्यु हुई है तो हम उनके साथ जीवित भी होंगे;

<sup>12</sup> यदि हम धीरज धारण किए रहें तो, हम उनके साथ शासन भी करेंगे, यदि हम उनका इनकार करेंगे तो, वह भी हमारा इनकार करेंगे।

<sup>13</sup> हम चाहे सच्चाई पर चलना त्याग दें, तो भी वह विश्वासयोग्य रहते हैं, क्योंकि वह अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं जा सकते।

<sup>14</sup> उन्हें इन विषयों की याद दिलाते रहो। परमेश्वर की उपस्थिति में उन्हें चेतावनी दो कि वे शब्दों पर वाद-विवाद न किया करें। इससे किसी का कोई लाभ नहीं होता परंतु इससे सुननेवालों का विनाश ही होता है।

<sup>15</sup> सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाते हुए परमेश्वर के ऐसे ग्रहण योग्य सेवक बनने का पूरा प्रयास करो, जिसे लज्जित न होना पड़े।

<sup>16</sup> सांसारिक और व्यर्थ की बातचीत से दूर रहो, नहीं तो सांसारिकता बढ़ती ही जाएगी।

<sup>17</sup> और इस प्रकार की शिक्षा सँडे घाव की तरह फैल जाएगी। ह्यूमैनेओस तथा फ़िलेतॉस इसी के समर्थकों में से हैं,

<sup>18</sup> जो यह कहते हुए सच से भटक गए कि पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका। इस प्रकार उन्होंने कुछ को विश्वास से अलग कर दिया है।

<sup>19</sup> फिर भी परमेश्वर की पक्की नींव स्थिर है, जिस पर यह मोहर लगी है: “प्रभु उन्हें जानते हैं, जो उनके हैं。” तथा “हर एक, जिसने प्रभु को अपनाया है, अधर्म से दूर रहे।”

<sup>20</sup> एक सम्पन्न घर में केवल सोने-चांदी के ही नहीं परंतु लकड़ी तथा मिट्टी के भी बर्तन होते हैं—कुछ अच्छे उपयोग के लिए तथा कुछ अनादर के लिए।

<sup>21</sup> इसलिये जो व्यक्ति स्वयं को इस प्रकार की गंदगी से साफ़ कर लेता है, उसे अच्छा, अलग किया हुआ, स्वामी के लिए उपयोगी तथा हर एक भले काम के लिए तैयार किया हुआ बर्तन माना जाएगा.

<sup>22</sup> जवानी की अभिलाषाओं से दूर भागों तथा उनकी संगति में धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति का स्वभाव करो, जो निर्मल हृदय से प्रभु को पुकारते हैं

<sup>23</sup> मूर्खता तथा अज्ञानतापूर्ण विवादों से दूर रहो; यह जानते हुए कि इनसे झगड़ा उत्पन्न होता है।

<sup>24</sup> प्रभु के दास का झगड़ालू होना सही नहीं है. वह सबके साथ कृपालु, निपुण शिक्षक, अन्याय की स्थिति में धीरजवंत हो,

<sup>25</sup> जो विरोधियों को नम्रतापूर्वक इस संभावना की आशा में समझाए कि क्या जाने परमेश्वर उन्हें सत्य के ज्ञान की प्राप्ति के लिए पश्चाताप की ओर भेजें।

<sup>26</sup> वे सचेत हो जाएं तथा शैतान के उस फंदे से छूट जाएं जिसमें उसने उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए जकड़ रखा है।

## 2 Timothy 3:1

<sup>1</sup> यह समझ लो कि अंतिम दिन कष्ट देनेवाला समय होगा।

<sup>2</sup> मनुष्य स्वार्थी, लालची, डींगमार, अहंकारी, परमेश्वर की निंदा करनेवाला, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाला, दयारहित, अपवित्र,

<sup>3</sup> निर्मम, क्षमा रहित, दूसरों की बुराई करनेवाला, असंयमी, कठोर, भले का बैरी,

<sup>4</sup> विश्वासघाती, ढीठ, घमंडी तथा परमेश्वर भक्त नहीं परंतु सुख-विलास के चाहनेवाले होंगे।

<sup>5</sup> उनमें परमेश्वर भक्ति का स्वरूप तो दिखाई देगा किंतु इसका सामर्थ्य नहीं. ऐसे लोगों से दूर रहना।

<sup>6</sup> इन्हीं में से कुछ वे हैं, जो घरों में घुसकर निर्बुद्धि स्त्रियों को अपने वश में कर लेते हैं, जो पापों में दर्बी तथा विभिन्न वासनाओं में फंसी हुई हैं।

<sup>7</sup> वे सीखने का प्रयास तो करती हैं किंतु सच्चाई के सारे ज्ञान तक पहुंच ही नहीं पातीं।

<sup>8</sup> जिस प्रकार यान्नेस तथा याम्ब्रेस ने मोशेह का विरोध किया था, उसी प्रकार ये भ्रष्ट बुद्धि के व्यक्ति सच का विरोध करते हैं. बनावटी है इनका विश्वास।

<sup>9</sup> यह सब अधिक समय तक नहीं चलेगा क्योंकि उन दोनों के समान उनकी मूर्खता सबके सामने प्रकाश में आ जाएगी।

<sup>10</sup> तुमने मेरी शिक्षा, स्वभाव, उद्देश्य, विश्वास, सताए जाने के समय, प्रेम तथा धीरज और सहनशीलता का भली-भाँति अनुसरण किया है।

<sup>11</sup> तथा तुम्हें मालूम है कि अतियोख, इकोनियॉन तथा लुस्त्रा नगरों में मुझ पर कैसे-कैसे अत्याचार हुए, फिर भी उन सभी में से प्रभु ने मुझे निकाला है।

<sup>12</sup> यह सच है कि वे सभी, जो मसीह येशु में सच्चाई का जीवन जीने का निश्चय करते हैं, सताए ही जाएंगे,

<sup>13</sup> परंतु दुष्ट तथा बहकानेवाले छल करते और स्वयं छले जाते हुए लगातार विनाश के गड्ढे में गिरते जाएंगे।

<sup>14</sup> किंतु तुम स्वयं उन शिक्षाओं में, जो तुमने प्राप्त की तथा जिनके विषय में तुम आश्वस्त हो चुके हो, स्थिर रहो, यह याद रखते हुए कि किन्होंने तुम्हें ये शिक्षाएं दी हैं,

<sup>15</sup> यह भी कि बचपन से तुम पवित्र अभिलेखों से परिचित हो, जो तुम्हें वह बुद्धिमता देने में समर्थ हैं, जिससे मसीह येशु में विश्वास के द्वारा उद्धार प्राप्त होता है।

<sup>16</sup> संपूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है. यह शिक्षा देने, गलत धारणाओं का विरोध करने, दोष-सुधार तथा धार्मिकता की शिक्षा के लिए सही है,

<sup>17</sup> कि परमेश्वर का जन पूरी तरह से हर एक अच्छे कार्य के लिए सुसज्जित पाया जाए.

## 2 Timothy 4:1

<sup>1</sup> मैं परमेश्वर तथा मसीह येशु की उपस्थिति में, जो जीवितों तथा मरे हुओं का न्याय करेंगे तथा उनके दोबारा आगमन तथा उनके राज्य के विषय को ध्यान में रखते हुए तुम्हें चेतावनी देता हूँ:

<sup>2</sup> वचन का प्रचार करो. समय अनुकूल हो या प्रतिकूल, हमेशा तैयार रहो, अत्यंत धीरज के साथ तथा शिक्षा के लक्ष्य से गलत धारणाओं का विरोध करो, कर्तव्य का अहसास कराओ तथा प्रोत्साहित करो,

<sup>3</sup> क्योंकि एक ऐसा समय आएगा जब वे खरी शिक्षाओं को सह न सकेंगे. वे अपनी लालसा पूरी करने के लिए ऐसे उपदेशकों को इकट्ठा करेंगे, जो उन्हें सिर्फ कानों को अच्छा लगाने वाले उपदेश देंगे.

<sup>4</sup> एक ओर तो वे सच्चाई से कान फेर लेंगे तथा दूसरी ओर कहानियों पर ध्यान लगाएंगे

<sup>5</sup> परंतु तुम इन सब विषयों में सावधान रहना; कठिनाइयां सह लेना; ईश्वरीय सुसमाचार के प्रचारक का काम करना; अपनी सेवकाई को पूरा करना.

<sup>6</sup> मैं अर्घ (पेय-यज्ञ) के समान उंडेला जा चुका हूँ, मेरे जाने का समय आ चुका है.

<sup>7</sup> मेरा संघर्ष सार्थक रहा है. मैंने अपनी ढौड़ पूरी कर ली है. मैंने दृढ़तापूर्वक विश्वास को थामे रखा है.

<sup>8</sup> भविष्य में मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट सुरक्षित है, जो न्याय करनेवाले प्रभु मुझे उस दिन देंगे—मुझे ही नहीं परंतु उन सबको भी, जो उनके दोबारा आगमन की बड़ी आशा से प्रतीक्षा कर रहे हैं.

<sup>9</sup> तुम जल्द से जल्द मेरे पास आने का पूरा प्रयास करो

<sup>10</sup> क्योंकि देमास ने आधुनिक युग के आकर्षण में मुझे त्याग कर थेस्सलोनिकेयुस नगर जाना सही समझा है. क्रैसकेस गलातिया नगर और तीतॉस दालमतिया नगर गए हुए हैं.

<sup>11</sup> केवल लूकाई से मेरे साथ है. आते हुए मार्कास को अपने साथ ले आना क्योंकि वह सेवकाई में मेरे लिए उपयोगी है.

<sup>12</sup> मैंने तुम्हिका को इफेसॉस नगर भेज दिया है.

<sup>13</sup> वह अंगरखा, जो मैं त्रोअॉस नगर में कार्पूस के पास छोड़ आया था, साथ लेते आना, साथ ही वे ग्रंथ भी, विशेषतः चर्मपत्र.

<sup>14</sup> अलेक्सान्दरॉस ठठेरे ने मेरी बड़ी हानि की है. प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करें.

<sup>15</sup> तुम स्वयं भी उससे सावधान रहो क्योंकि उसने हमारी शिक्षा का कड़ा विरोध किया था.

<sup>16</sup> मेरी पहली सुनवाई के समय कोई मेरे साथ नहीं था—सबने मुझे त्याग दिया; इसके लिए उन्हें दोषी न माना जाए.

<sup>17</sup> प्रभु मेरे साथ थे तथा उन्होंने मुझे सामर्थ्य दी कि मेरे द्वारा संदेश की घोषणा पूरी तरह सम्पन्न हो जाए तथा सब गैर-यहूदी इसे सुन सकें. मैं सिंह के मुख से बचा लिया गया.

<sup>18</sup> प्रभु मुझे हर एक बुराई से उबारेंगे तथा अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित ले जाएंगे. उनकी माहिमा युगानुयुग हो. आमेन.

<sup>19</sup> प्रिस्का व अकुलॉस को तथा ओनेसिफोरस के परिवार को मेरा नमस्कार.

<sup>20</sup> इरास्तुस अब तक कोरिन्थॉस नगर में ही है परंतु त्रोफिमस की बीमारी के कारण उसे मिलेतॉस नगर में छोड़ना पड़ा.

<sup>21</sup> जाड़े के पहले ही आने का पूरा प्रयास करना. तुम्हें यूबुलस का नमस्कार, साथ ही पुदेन्स, लीनोस, क्लौदिआ तथा सभी विश्वासी भाई बहनों को भी नमस्कार.

<sup>22</sup> प्रभु तुम्हारी आत्मा के साथ हों. तुम पर अनुग्रह बना रहे.